जयपुर जिले में शिक्षा की भूमिका के संदर्भ में महिला सशक्तिकरण का अध्ययन

एक सिनॉप्सिस

शिक्षा में डॉक्टरेट के पंजीकरण के लिए प्रस्तुत

शिक्षा विभाग में,

ज्योति विध्यापीठ

पर्यवेक्षिका:

डॉ . मंजू शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर और डीन
शिक्षा विभाग

प्रस्तुतकर्ता:

शिल्पिका तिवारी
शोधकत्री
(शिक्षा)

शिक्षा विभाग
ज्योति विध्यापीठ महिला विश्वविध्यालय
जयपुर राजस्थान
2018-19

सूची

एस।	टॉपिक	पेज नं।
1	परिचय	
2	साहित्य की समीक्षा	
3	अध्ययन की आवश्यकता	
4	समस्या का विवरण	
5	उद्देश्य	
6	हाइपोथीसिस	
7	क्रियाविधि	
8	नमूना	
9	संग्रह का उपकरण	
10	समस्या की सीमा	
11	ग्रंथ सूची	

“जयपुर जिले में शिक्षा की भूमिका के संदर्भ में महिला सशक्तिकरण का अध्ययन “

प्रस्तावना -

मानव जीवन में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। जन्म से बालक पाशविक प्रवृत्तियों से युक्त होता है उसके व्यवहार में सौंदर्य ,निपुणता ,उत्कृष्टता लाने का कार्य शिक्षा ही करती है। शिक्षा के द्वारा ही बालक का सर्वांगीण विकास होता है जिससे वह समाज व राष्ट्र का निर्माण करता है। अपनी सभ्यता की रक्षा करता है जीवन की उदात्त उच्चता, सौंदर्य, उत्कृष्टता शिक्षा द्वारा ही संभव हो पाते हैं। समाज में सुख, समृद्धि लाने का कार्य भी शिक्षा ही करती है। शिक्षा बालक के सभी पक्षों जैसे -शारीरिक, मानसिक ,भावात्मक ,संवेगात्मक, सामाजिक का विकास करती है। शिक्षा के बिना मनुष्य एक पशु के समान है। आदिमानव काल से अंतरिक्ष मानव तक का सफर शिक्षा के द्वारा ही हमने तय किया है अतः शिक्षा निश्चित तौर पर मानव जीवन को उत्कृष्टता तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

शिक्षा ज्ञान ,कौशल ,मूल्यों को सीखने की सुविधा प्रदान करने की प्रक्रिया है। शिक्षा एक सामान्य ज्ञान के लिए तर्क और निर्णय लेने की शक्तियों को विकसित करने और सामान्य रूप से स्वयं को या दूसरों को बौद्धिक रूप से विकसित करने की, सामान्य ज्ञान प्रदान करने की एक प्रक्रिया है।

शिक्षा का अर्थ-

व्युत्पत्ति की दृष्टि से शिक्षा शब्द संस्कृत की" शिक्ष" धातु से बना है जिसका अर्थ है सीखना और सिखाना अतः मूल अर्थ में यह सीखना और सिखाना दोनों है -सीखने के अर्थ में प्रायः' शिक्षा प्राप्त करना' और सिखाने के अर्थ में 'शिक्षा प्रदान करना' दोनों क्रियाए इसमें सम्मिलित है।

शिक्षा शब्द को अंग्रेजी में एजुकेशन कहते हैं जो लैटिन भाषा के एजुकेटम या एजुकेयर से बना है एजुकेटम दो शब्दों 'ए' और 'डूको' से मिलकर बना है 'ए' का अर्थ है अंदर से और 'डूको' का अर्थ है बाहर आना। इस प्रकार व्युत्पत्ति के आधार पर एजुकेशन का अर्थ हुआ अंदर से बाहर आना।

एजुकेयर का अर्थ है पालन पोषण करना, संवर्धन करना, पथ प्रदर्शन करना। अतः हिंदी ,अंग्रेजी दोनों व्युत्पत्ति के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि" शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है"। बालक में शक्तियाँ जन्मजात रूप से ही मौजूद है शिक्षा का कार्य ऐसा वातावरण उपलब्ध कराना है जिससे वह उन शक्तियों को ज्यादा से ज्यादा विकसित कर सके। बालक के मस्तिष्क में ज्ञान को ठुसना अब इसका अर्थ नहीं स्वीकार किया जाता बल्कि अंतर्निहित सर्वांगीण गुणों का सर्वोत्तम प्रकटीकरण ही शिक्षा है।

शिक्षा की परिभाषाएं-

1.स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क की रचना ही शिक्षा है।

अरस्तु

2.व्यक्ति के अंदर निहित पूणता का उद्घाटन ही शिक्षा है।

स्वामी विवेकानंद

3. शिक्षा से मेरा तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जो बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन एवं आत्मा के सर्वोत्कृष्ट रूपों को प्रस्फुटित कर दे।

महात्मा गांधी

4. शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो अच्छी आदतों के द्वारा बच्चों में अच्छी नैतिकता का विकास करती है।।

प्लेटो

उपरोक्त परिभाषा से शिक्षा की यह विशेषता प्रकट होती है कि शिक्षा के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास होता है एक प्रक्रिया है ,ना की उपलब्धि उपलब्धि तो इस प्रक्रिया का परिणाम है। बालक के ऊपर शिक्षा को ठोपना नहीं चाहिए बल्कि शिक्षा अंतर्निहित होती है शिक्षा के अर्थ को इस प्रकार समझा जा सकता है-

1. शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा जन्म से लेकर मृत्यु तक ज्ञान की प्राप्ति की जाती है ।
2. शिक्षा मनुष्य जीवन के लिए मूल्यवान है।
3. शिक्षा की प्रक्रिया स्कूल ,कॉलेज तथा विश्वविद्यालय तक चलती रहती है ।
4. शिक्षा एक प्रकार का अनुदेशन तथा प्रशिक्षण है।

शिक्षा का उद्देश्य-

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्तियों को ,समाज को शिक्षित करने के लिए तैयार करना और उन्हें अर्थव्यवस्था में काम करने के लिए योग्य बनाना है और साथ ही जीवन में शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का समग्र विकास है। शिक्षा व्यक्तियों की सर्वोत्तम क्षमता को बढ़ावा देने के लिए शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में मदद करती है।शिक्षा लचीलापन, क्षमता, दृढ़ संकल्प आत्मविश्वास और रचनात्मक और महत्वपूर्ण सोच के विकास को बढ़ावा देती है। सर्वोत्तम विकास के लिए शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में मदद करती है।

शिक्षा के प्रकार

शिक्षा के दो प्रकार होते हैं-

1 .औपचारिक शिक्षा

2. अनौपचारिक शिक्षा

औपचारिक शिक्षा-

औपचारिक शिक्षा, शिक्षा का वह रूप है जिसमें निश्चित तरीके से शिक्षा प्रदान की जाती है। जिसमें बालक औपचारिक रूप से जानबूझ कर, सोच विचार कर निश्चित समय पर ,निश्चित उद्देश्य के लिए, निश्चित पाठ्यक्रम की शिक्षा प्राप्त करता है। औपचारिक शिक्षा बालक स्कूल ,कॉलेज ,विश्वविद्यालय आदि के द्वारा प्राप्त करता है। इस प्रकार की शिक्षा से मुख्य रूप से बालक का बौद्धिक विकास होता है।

अनौपचारिक शिक्षा -

अनौपचारिक शिक्षा वह शिक्षा है जिसे बालक उठते- बैठते, चलते-फिरते मित्रों के साथ खेलते कुदते ग्रहण कर लेता है। इसमें कोई भी चीज पूर्व नियोजित और पूर्व निश्चित नहीं होती है । इस प्रकार के शिक्षा के साधन में घर और परिवार का विशेष महत्व होता है। इस प्रकार की शिक्षा में बालक का बौद्धिक विकास होने के साथ-साथ चारित्रिक विकास, नैतिक विकास, संवेगात्मक विकास ,सामाजिक विकास अतः संपूर्ण विकास होता है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ

महिला सशक्तिकरण एक ऐसी धारणा है जो महिलाओं को शक्तिशाली, प्रभावशाली तथा निर्णय लेने योग्य बनाती है। मध्यकाल में महिलाओं की स्थिति दयनीय हो गई थी जिसमें महिलाएं विभिन्न प्रकार की कुपथाओ से ग्रसित हो गई थी। वह स्वयं कोई निर्णय नहीं ले पाती थी। पुरुष सत्तात्मक समाज में नारी जन्म से लेकर मृत्यु तक पुरुषों के आदेशों का गुलाम रहती थी। हालांकि सरकार द्वारा विभिन्न कानून स्त्रियों के हित में बनाए गए परंतु वह सिर्फ सैद्धांतिक तौर पर ही रहे व्यवहारिक तौर पर स्त्रियों की स्थिति में सुधार पूर्ण रूप से नहीं आ पाया ।19वीं शताब्दी में एक नया आंदोलन नारी सशक्तिकरण सामने आया जिसने नारी की गरिमा, महत्व, सम्मान ,विचारों ,सोच, निर्णय को महत्व दिया।

सशक्तिकरण वह प्रक्रिया है जो महिलाओं में शक्ति पैदा करती है। जब वे सीमाओं और प्रतिबंधों के बिना उपलब्ध अवसरों का उपयोग करने में सक्षम होती हैं तो उसे महिला सशक्तिकरण कहते हैं। अपने निर्णय लेने का अधिकार महसूस करने से सशक्तिकरण की भावना पैदा होती है। सशक्तिकरण में शिक्षा के माध्यम से महिलाओं की स्थिति बढ़ाने, जागरूकता बढ़ाने, साक्षरता और महिलाओं को प्रशिक्षित करने और महिलाओं को समाज में विभिन्न समस्याओं के माध्यम से जीवन का निर्णय लेने की अनुमति देने का कार्य शामिल है।

महिला सशक्तीकरण से तात्पर्य निर्भरता और अभावों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति से महिलाओं की मुक्ति है। अक्सर लैंगिक समानता का पर्याय महिला सशक्तिकरण को माना जाता है परंतु महिला सशक्तिकरण एक वृहत अर्थ वाला शब्द है जिसको गहराई के साथ ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि नारी सशक्तीकरण के द्वारा ही नारियों का विकास किया जा सकता है और नारी सशक्तिकरण से नारियों का, समाज का ,परिवार का, राष्ट्र का, विकास किया जाता है। जहां नारियों का सम्मान होता है वहां स्वयं देवता निवास करते हैं यह हमारे धर्म ग्रंथों में कहा गया है।

महिला सशक्तिकरण की अवधारणा शक्ति से संबंधित है। महिलाओं के सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना, आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना, सकारात्मक आत्मसम्मान होना, किसी भी कठिन परिस्थिति का सामना करने के लिए आत्मविश्वास पैदा करना और विभिन्न सामाजिक-राजनीतिक विकास के प्रयासों में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना है।

भारतीय समाज में नारियों की स्थिति-

भारतीय समाज पुरुष प्रधान है लेकिन भारत में ही नहीं, पूरे विश्व में महिलाओं के प्रति भेदभाव और शोषण की नीतियों का सदियों से ही बोलबाला रहा है हालांकि उसके मापदंड व तरीके भिन्न-भिन्न रहे हैं I सीता से लेकर द्रौपदी तक को यहां पुरुष सत्तात्मक मानसिकता को झेलना पडा है I हर युग में पुरुष के वर्चस्व की किमत नारी ने चुकाई है या उसे चुकाने पर मजबुर होना पडा है I यही कारण रहा कि" ढोल,गंवार, शुद्र, पशु नारी , ये सब ताडन के अधिकारी" और "नारी तेरी यही कहानी आंचल में दूध आंखों में पानी" जैसी रचनायें रची गईं , जो स्पष्ट इस बात की पूर्ति करती हैं कि वैदिक काल में हमारे देश में जिस नारी को पूज्यनीय माना जाता था , उसे पुरुष समान इज्जत दी जाती थी , मातृ देवो भव : कहा जाता था.....उस नारी- आदर और सम्मान का , उस की दिशा और दशा का किस तरह पतन हुआ...!! क्यों ऐसा हुआ ? क्योंकि मुगल सत्ताधीशों का आंतक इस तरह अपना सिर ऊंचा कर बैठा था कि नर को नारी को इस आतंक से बचाने के लिये पर्दा-प्रथा को लाना पडा और पर्दा प्रथा के साथ साथ सती प्रथा ,जोहर प्रथा ,बाल विवाह अनेकों प्रथाओं ने समाज में घर कर लिया और नारी की स्थिति दयनीय बना दी। नारी की इस स्थिति से छुटकारा पाने के लिए आधुनिक काल में **20** वीं शताब्दी में नारी सशक्तिकरण का आंदोलन प्रारंभ हुआ।

महिला सशक्तिकरण के प्रकार

महिला सशक्तिकरण को विभिन्न भागों में बांटा जा सकता है क्योंकि यह महिलाओं के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों से संबंधित होता है जैसे-

1 <u>व्यक्तिगत सशक्तिकरण</u>

व्यक्तिगत सशक्तिकरण का अर्थ है कि एक महिला को बिना किसी बंदिशों के अपने विचारों तथा भावनाओं को व्यक्त करने का अधिकार है। व्यक्तिगत सशक्तिकरण आत्मविश्वास, ज्ञान, शक्ति ,स्वतंत्र निर्णय निर्माण प्रक्रिया के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है महिलाओं को अपने अधिकारों, सामाजिक

स्थितियों तथा संविधान द्वारा प्राप्त सुविधाओं का ज्ञान होना चाहिए तभी वह व्यक्तिगत रूप से सशक्त हो सकती है।

2. सामाजिक सशक्तिकरण

सामाजिक सशक्तिकरण का अर्थ है कि समाज में महिलाओं तथा पुरुषों को समान महत्व व सम्मान दिया जाए सामाजिक सशक्तिकरण से जुड़ा महत्वपूर्ण बिंदु लैंगिक समानता है आज भी समाज में लड़के और लड़कियों में अंतर समझा जाता है। लैंगिक समानता को अपनाकर महिलाओं की स्थिति को समाज में बढ़ाया जा सकता है ।लैंगिक समानता का तात्पर्य है कि समाज में महिलाएं और पुरुष समान अवसरों ,समान परिणामो ,समान अधिकारों, समान निर्णयो का इस्तेमाल कर रहे हैं ।इसके साथ ही महिलाओं को सामाजिक कार्यों में स्वतंत्रता पूर्वक चुनाव की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

3. कानूनी सशक्तिकरण

कानूनी सशक्तिकरण का अर्थ है कि कानून के द्वारा महिलाओं को बहुत सी सुविधाएं व अधिकार प्रदान किए गए हैं तथा उनके हित में विभिन्न कानून बनाए गए हैं। सशक्तिकरण का तात्पर्य है कि महिलाएं उन सभी अधिकारों व सुविधाओं के प्रति जागरूक हो ताकि उनके साथ हो रहे शोषण को रोका जा सके। कानूनी सशक्तिकरण के तहत वास्तव में जो कानून उनके लिए बने हैं और जिसका वह उपयोग करती है के मध्य अंतर को समाप्त किया जाता है। आज भी समाज में बहुत सी ऐसी नारियां हैं जिन्हें संविधान द्वारा उन्हें प्रदान किए गए अधिकारों ,संरक्षणो की जानकारी नहीं है जिसके अभाव में वे शोषित होती रहती है। कानूनी सशक्तिकरण उन्हें उनके अधिकारों व कानूनों के प्रति जागरूक बनाता है ताकि नारी के शोषण को समाज में समाप्त किया जा सके।

4. राजनीतिक सशक्तीकरण

राजनीतिक व्यवस्था ,राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को पोत्साहित करती है तथा भागीदारी के साथ साथ उनके विचारों तथा निर्णयो का सम्मान भी करती है। इस हेतु भारतीय संविधान में महिलाओं के हित में लैंगिक समानता को प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न अनुच्छेद बनाए गए हैं जो निम्नलिखित है-

- अनुच्छेद **14**

कानून के समक्ष समानता, राज्य किसी भी व्यक्ति को कानून के समक्ष समानता से इनकार नहीं करेगा। भारत के क्षेत्र में कानूनों का समान संरक्षण किया जाएगा। धर्म, जाति, पजाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं दिया जाएगा।

- अनुच्छेद **16 (2)**

अवसरों की समानता, राज्य किसी भी व्यक्ति को कानून के समक्ष समानता और कानून के समान संरक्षण को राज्य क्षेत्र में धर्म ,जाति, प्रजाति ,लिंग, जन्म स्थान के आधार पर समानता से इनकार नहीं कर सकता।

- अनुच्छेद **23**

यह अनुच्छेद नागरिकों को शोषण के विरुद्ध अधिकार प्रदान करता है।

- अनुच्छेद **39(a)**

नागरिक पुरुषों और महिलाओं को समान रूप से आजीविका के पर्याप्त साधनों का अधिकार है।

- अनुच्छेद **40 (73** वें संशोधन के पश्चात**)**

पंचायतों में एक तिहाई सीट महिलाओं के लिए आरक्षित होगी।

- अनुच्छेद **42**

राज्य , मानवीय कार्य स्थितियों और मातृत्व राहत के प्रावधानों को पूरा करेगा।

- अनुच्छेद **51 (A)**

प्रत्येक नागरिक के कर्तव्यों में महिला की गरिमा के लिए अपमानजनक प्रथाओं का त्याग करना है। सरकारी कानूनों और उसके बाद के संशोधनों ने महिलाओं को समाज में उनके सम्मान के संबंध में बड़ा विकास देखा है। हिंदू उत्तराधिकार **(**संशोधन**)** अधिनियम **2005** में कहा गया है कि महिलाओं को पैतृक संपत्ति या समान पारिश्रमिक अधिनियम **1976** में समान हिस्सेदारी मिलती है**।**

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता-

महिला सशक्तीकरण आज समाज की मांग है **।** भारतीय समाज एक मजबूत पितृसत्तात्मक समाज है जिसमें गहरे सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य हैं, जो देश में महिला सशक्तिकरण की प्रगति को प्रभावित करता है। समय की आवश्यकता एक समतामूलक समाज है, जहाँ लैंगिक श्रेष्ठता के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए**।** महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य ऐसी शक्तियों की पहचान करना और उन्हें समाप्त करना है, जो अपनी महिला समकक्षों पर पुरुष प्रभुत्व की परंपरा को बनाए रखने के लिए निर्देशित की जाती हैं। महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए आवश्यक है महिलाएं देश की कुल जनसंख्या का लगभग **50%** है यदि महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त होंगी तो देश का आर्थिक विकास निसंदेह बढ़ेगा**।** आर्थिक विकास के साथ-साथ पारिवारिक और सामाजिक विकास हेतु भी महिला सशक्तिकरण आवश्यक है। एक पुरुष के शिक्षित होने पर केवल वही शिक्षित होगा जबकि एक महिला के शिक्षित होने पर पूरा परिवार ,समाज व राष्ट्र शिक्षित व सशक्त होगा**।**

महिलाओं को अभी भी बुनियादी शिक्षा से वंचित रखा जाता है और कभी भी बुनियादी शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद उच्च शिक्षा हासिल करने की अनुमति नहीं दी जाती है। प्रतिभा का यह भारी बर्बादी निश्चित रूप से पुरुषों की ही देन है हालांकि पुरुष अभी भी देश में नियोक्ताओं की दूसरी पसंद बने हुए हैं। प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में पिछड़े हुए हैं। इसकी वास्तविकता में महिला सशक्तीकरण समाज के पूर्ण विकास का पर्याय है। एक शिक्षित महिला, स्वास्थ्य, स्वच्छता के बारे में ज्ञान के साथ, स्वच्छता उसके परिवार के लिए एक बेहतर रोग-मुक्त वातावरण बनाने में सक्षम है। एक स्व-नियोजित महिला न केवल अपने परिवार के

वित्त में योगदान करने में सक्षम है, बल्कि देश के समग्र सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि के लिए भी योगदान देती है।

आय का एक साझा स्रोत ,एक एकल आय वाले घर की तुलना में जीवन की गुणवत्ता के उत्थान की अधिक संभावना रहती है और परिवार को गरीबी के जाल से बाहर आने और परिवार का आर्थिक विकास करने में मदद करता है। अपने कानूनी अधिकारों से अवगत महिलाओं को घरेलू हिंसा या शोषण के अन्य रूपों का शिकार होने की संभावना कम होती है। **73** व **74** वें संविधान संशोधन **1993** के द्वारा महिलाओं को संविधान में विशेष शक्तियां प्रदान की गई है उन्हें कुल सीटों का **33%** आरक्षण दिया गया है यह आरक्षण महिलाओं की स्थिति में सुधार करने हेतु महत्वपूर्ण कदम है ग्रामीण स्तर पर महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक स्थिति में सुधार होगा तथा कुछ निश्चित क्षेत्रों में भ्रष्टाचार की मात्रा कम होगी और उससे अनेक फायदे सामने आएंगे**।**

शिक्षा की महिला सशक्तिकरण में भूमिका

शिक्षा महिला सशक्तीकरण, समृद्धि, विकास और कल्याण के लिए महत्वपूर्ण कारक है **।**गर्भ से कब्र तक महिलाओं का विघटन लगातार होता रहता है। सभी क्षेत्रों में महिलाए असमानता ,अस्थायित्व और असहायता से जूझ रही है। जीवन के सभी मौकों, जीवन के सभी क्षेत्रों में सुधार करने की आवश्यकता है। जीवन के सभी क्षेत्रों मे उन्हें दबाया जाता है, अतः सभी क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता है। समाज द्वारा निर्मित लैंगिक असमानता से लड़ने के लिए महिलाओं को सशक्त एवं शक्तिशाली होने की आवश्यकता है और यह सशक्तीकरण केवल एक साधन शिक्षा द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि उसके द्वारा ही महिलाओं को सशक्त किया जा सकता है। महिला सशक्तिकरण में शैक्षिक योग्यता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा और साक्षरता महिलाओं को सशक्त बनाती है। किसी समाज या राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिए तथा उसका आर्थिक विकास करने के लिए ना केवल शिक्षा की वरन विशेष तौर पर महिला नागरिकों की शिक्षा की आवश्यकता होती है। शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा महिलाओं की समाज में स्थिति को बदला जा सकता है तथा समाज में असमानता, लैंगिक विविधता को दूर किया जा सकता है तथा महिलाओं का संपूर्ण विकास किया जा सकता है ।

”यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं , जबकि जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं, महिलाएं सशक्तिकरण का अर्थ है मदर इंडिया सशक्तिकरण।”

जवाहर लाल नेहरू

महिला शिक्षा का महत्व

- महिला सशक्तिकरण हेतु
- महिलाओं के आर्थिक विकास हेतु
- जनसंख्या नियंत्रण हेतु
- बालकों के नैतिक विकास हेतु
- साक्षरता दर को बढ़ाने हेतु

महिला सशक्तिकरण का महत्व

- समाज के विकास हेतु
- घरेलू हिंसा को कम करने हेतु
- महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि हेतु
- आर्थिक विकास एवं गरीबी में कमी हेतु
- निर्णय निर्माण में भागीदारी हेतु
- लैंगिक समानता हेतु
- परिवार नियोजन हेतु
- महिलाओं एवं उनके बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य हेतु

।। साहित्य की समीक्षा

1. सुब्बुराज अलगारसामी, शेखर एम, एम शुमुनुगा जुलाई **21.2015**। "महिला सशक्तिकरण,शिक्षा की भूमिका," रिसर्चगेट पर सार।

शिक्षा महिला शक्तिकरण, समृद्धि, विकास और कल्याण के लिए महत्वपूर्ण कारक है। गर्भ से कब्र तक महिलाओं का भेदभाव सर्वविदित है। जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं का उत्पीड़न जारी है, उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रों में सशक्त होने की आवश्यकता है। सामाजिक रूप से निर्मित लैंगिक असमानता को दूर करने हेतु महिलाओं को समाज में लड़ना होता है जिसके लिए बहुत शक्ति की आवश्यकता है और महिला सशक्तिकरण ही महिला को वह शक्ति प्रदान कर सकता है। महिलाओं में सशक्तीकरण करने का एकमात्र साधन शिक्षा ही है और ग्रामीण विकास हेतू भी महिलाओं का सशक्तीकरण आवश्यक है। इस पेपर को लिखने का उद्देश्य महिलाओं के मध्य जागरूकता का प्रसार करना है । तथा महिलाओं को सशक्तिकरण सशक्तिकरण के विभिन्न प्रकार सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका और इस प्रकार महिलाओं के संपूर्ण

सशक्तिकरण का मदुरई जिले में अध्ययन करना है। मदुरै जिले में **455** महिलाओं का सशक्तिकरण का अध्ययन करने हेतु चयन किया गया जो कि **20-50** आयु वर्ग के बीच थी।
अध्ययन का परिणाम यह दर्शाता है कि महिलाओं की शैक्षणिक योग्यता महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है शिक्षा के माध्यम के द्वारा ही महिलाओं को सशक्त किया जा सकता है सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है महिलाओं में साक्षरता के स्तर को बढ़ाना।

2. तिलोना एना**, 23** नवंबर **2016,** सशक्तिकरण डॉट ओआरजी
सभी बालकों को समान शैक्षिक अवसरों की समानता प्राप्त है। महिलाएं विश्व की कुल जनसंख्या मे **50%** स्थान रखती है। परंतु कुछ देशों में बालिकाओं की शिक्षा बिल्कुल नजरअंदाज की जाती है। लड़कियों को शिक्षा प्रदान नहीं की जाती है। जिसका कारण पारंपरिक**,** सांस्कृतिक मान्यताएं है जिसके तहत यह माना जाता है कि लड़कियों का कार्य केवल रसोई में खाना बनाने तक सीमित है उन्हें नौकरी तो नहीं करनी है अतः शिक्षा की आवश्यकता नहीं है।
परंतु इतिहास का अध्ययन करने पर यही चीज सामने आती है कि यदि हम एक आदमी को शिक्षित करते हैं तो हम एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं परंतु एक महिला की शिक्षा पूरे राष्ट्र को शिक्षित करती है ।एक महिला की शिक्षा उसके व्यक्तित्व का विकास कर उसे आत्मनिर्भर बनाती है तथा समाज में उसके सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करती है। शिक्षित महिला **,**नीति निर्माण **,**निर्णय निर्माण प्रक्रिया में ज्यादा से ज्यादा अपनी भूमिका निभा सकती है ।महिला सशक्तिकरण हेतु एक सम्मिलित प्रयास की आवश्यकता सरकार तथा समाज द्वारा की जानी चाहिए तभी अवसरों की समानता प्राप्त हो सकेगी और बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन मिल सकेगा और नारियों का सशक्तिकरण हो सकेगा**,** समाज से गरीबी दूर हो सकेगी। एक शिक्षित महिला आगे चलकर अपने परिवार को सही प्रकार से शिक्षा प्रदान कर सकेगी और अपने बच्चों के जीवन को समृद्ध और विकसित बना सकेगी उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में सफल बना सकेगी।
3. सेठी सौजनी और हंस बेसिल **,27** सितंबर **2015,** एब्स्ट्रेक्ट **,"**शिक्षा का महिला सशक्तिकरण एवं विकास में भूमिका मुद्दे एवं प्रभाव **"**एस एस आर एन पब्लिकेशन

जवाहरलाल नेहरू ने कहा है यदि हम एक आदमी को शिक्षित करते हैं तो हम एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं और यदि हम एक औरत को शिक्षित करते हैं तो संपूर्ण परिवार को शिक्षित करते हैं **।**महिला सशक्तिकरण का अर्थ है भारत का सशक्तीकरण **।** आज महिलाएं विश्व जनसंख्या के लगभग **50%** स्थान पर है **।** महिला सशक्तिकरण के द्वारा राष्ट्र की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाया जा सकता है**।** शिक्षा महिला सशक्तिकरण हेतु नीव का पत्थर है**।** शिक्षा महिलाओं को अपनी चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाती है तथा उनकी पारंपरिक भूमिका में परिवर्तन लाने में उनकी मदद करती है**।** भारत में लैंगिक असमानता को

दूर करने हेतु शिक्षा की जागरूकता फैलाना आवश्यक है जिससे कि लड़के और लड़कियों के मध्य भेदभाव को समाप्त किया जा सके I यह महिला शिक्षा के द्वारा ही संभव है और उसी से ही महिलाओं में सशक्तिकरण आ सकेगाI महिलाओं में अद्भुत समर्थ होता है जो शिक्षा के द्वारा ही सामने आ पाता हैI शिक्षा मानव विकास तथा समानता की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैI **2011** की जनगणना के अनुसार भारत में महिला साक्षरता दर **65.40%** है वहीं पुरुष साक्षरता दर **80%** हैI महिला साक्षरता मे वृद्धि करके ही महिलाओं को उनके अधिकार ,सम्मान ,सुरक्षा के प्रति जागरूक किया जा सकता हैI शिक्षा ही वह चाबी है जिसके द्वारा महिला स्वतंत्रता एवं विकास के सुनहरे दरवाजे को खोला जा सकता है और उन्हें उज्जवल भविष्य में प्रवेश कराया जा सकता हैI

4. घोष अहमद **2013** रिसर्च पेपर निबंध डॉट ओआरज

यह सर्वविदित तथ्य है कि शिक्षा ही वह विस्तृत साधन हैI जिसके द्वारा महिलाओं में सशक्तीकरण लाया जा सकता हैI शिक्षा उन्हें इस योग्य बनाती है कि वह अपनी समस्याओं का सामना कर सके Iअपने पारंपरिक भूमिकाओं तथा नवीन भूमिकाओं के साथ सामंजस्य बिठा सकें और अपने जीवन को उत्तम बना सके। शिक्षा के द्वारा ही समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारा जा सकता है ।तृतीय विश्व के देशों जैसे अफगानिस्तान में हुए शोध तथा इतिहास में हुए शोधों का अध्ययन करने से यह पता चलता है कि प्रजातंत्र तथा शांति की स्थापना वही हो सकती है जहां के नागरिक शिक्षित हो। शिक्षा के द्वारा नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाई जा सकती है तथा लड़के तथा लड़कियों के लिए समान अधिकार उपलब्ध कराए जा सकते हैं और लैंगिक असमानता को दूर किया जा सकता है।

5. शांतिलिन एस .पीएचडी थीसिस ,शोधगंगा "शिक्षा के द्वारा महिला सशक्तिकरण: एक केस स्टडी पांडिचेरी यूनियन टेरिटरी "

विस्तृत अर्थ में शिक्षा एक कार्य और अनुभव है जिसके द्वारा हमारे दिमाग ,चरित्र ,शारीरिक योग्यता में सकारात्मक और निर्माणात्मक प्रभाव पड़ता है ।शिक्षा के तकनीकी अर्थ में शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज मे ज्ञान, कौशल मूल्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होते हैं। शिक्षा के उद्देश्य व्यक्तिगत तथा सामाजिक अलग-अलग प्रकार के होते हैं ।

व्यक्तिगत उद्देश्यों में शिक्षा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है और सामाजिक उद्देश्यों में शिक्षा समाज में आधुनिकीकरण, उत्पादकता ,सहभागिता ,मूल्य निर्माण ,सामुदायिकता तथा संवैधानिक विकास करती है।

6. एलिस सुचिता ,**2016** थीसिस" गोरखपुर जिले में महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका"

वर्तमान अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि वर्तमान में महिलाओं को जागरूक तथा सचेत होना चाहिए। जिससे कि वह अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढ सकें तथा उनके साथ सामंजस्य बिठा सके ।आज

महिलाओं को तार्किक तथा समालोचनात्मक रूप से सोचने की आवश्यकता है जिसमें कि उनकी कुशलता में निपुणता आ सके ताकि वह दूसरों के हाथों की कठपुतली ना बने ।शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा महिलाएं अपने घर ,समाज व समुदाय के साथ सामंजस्य बिठा सकती हैं। शिक्षा के द्वारा ही परिवार के अन्य व्यक्तियों को महिलाओं की सामंजस्य समस्याओं के प्रति जागरूक किया जा सकता है तथा इन समस्याओं को दूर करने हेतु प्रेरित किया जा सकता है। इस अध्ययन के द्वारा शिक्षा व्यवस्था को विकसित करने का सुझाव दिया गया है जिससे कि महिलाओं का सशक्तीकरण बढ़ाया जा सके और उनकी समस्याओं को कम किया जा सके।

।।। अध्ययन की आवश्यकता

आज **21**वीं शताब्दी में भी महिलाओं के प्रति असमानता, शोषण पूरे विश्व में नजर आता है ।भारत जेसै पुरुष प्रधान देशों में इस शोषण, अत्याचार की खबरें और अधिक मात्रा में सुनाई व दिखाई देती है। विश्व की कुल जनसंख्या का **50%** महिलाएं हैं परंतु दुर्भाग्यवश उनमें से अधिकांश महिलाएं अपने शिक्षा के अधिकार, बोलने की स्वतंत्रता, मतदान स्वतंत्रता, अपनी स्वतंत्र पहचान प्राप्त नहीं कर पाती है। महिलाओं के साथ अपराध पूरे विश्व में हो रहे हैं कहीं ज्यादा और कहीं कम। यह अपराध ही महिला सशक्तिकरण की स्वीकृति पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं। विकसित, विकासशील और अर्ध विकसित देशों में महिलाओं को सम्मानजनक स्थिति प्राप्त नहीं है ।भारत जैसे देश में सैद्धांतिक तौर पर महिलाएं पुरुषों के समान हर क्षेत्र में समानता प्राप्त करती हैं जैसा कि हमारे संविधान में वर्णित है और इसके लिए कई अनुच्छेद भी बने हैं परंतु दहेज प्रताड़ना, घरेलू हिंसा ,तेजाब फेंकना बलात्कार आदि समाचार पत्रों की हेडलाइंस को पढ़ने के बाद महिला सशक्तिकरण शब्द एक मजाक सा नजर आता है। वर्तमान समय में महिलाओं के विकास हेतु हमें हमारी विचारधारा में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है जिसकी जड़ें बहुत गहरी है ।लैंगिक असमानता को दूर करके ही समाज में महिलाओं की स्थिति को सम्मानजनक बनाया जा सकता है। आज भी महिलाएं शिक्षा से वंचित रहती है, उन्हें स्वतंत्रता पूर्वक आने जाने की रोक होती है, स्वास्थ्य के प्रति जागरूक नहीं होती है ,वह नौकरी नहीं कर पाती है, पौष्टिक भोजन नहीं खाती है, अतः महिला जागरूकता और सशक्तिकरण हेतु शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस अध्ययन के द्वारा महिला सशक्तिकरण पर शिक्षा की भूमिका का अध्ययन किया जाएगा। महिलाओं के आर्थिक ,सामाजिक ,पारिवारिक, बौद्धिक विकास का सशक्तीकरण पर प्रभाव देखा जाएगा अतः यह अध्ययन वर्तमान समाज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

IV समस्या का विवरण

समस्या का विवरण “जयपुर जिले में शिक्षा की भूमिका के संदर्भ में महिला सशक्तिकरण का अध्ययन है”।

IIV उद्देश्य

I. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण का उनकी वित्तीय स्थिति के आधार पर अध्ययन करना।

2.ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण का उनकी पारिवारिक स्थिति के आधार पर अध्ययन करना।

3.ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिला सशक्तीकरण का उनकी सामाजिक स्थिति के आधार पर अध्ययन करना।

4. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिला सशक्तीकरण का उनकी बौद्धिक स्थिति **(**आईक्यू**)** के आधार पर अध्ययन करना।

VI परिकल्पना-

अध्ययन की परिकल्पनाए निम्नानुसार है**-**

1. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण के मध्य वित्तीय स्थिति के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2.ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण के मध्य पारिवारिक स्थिति के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3.ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण के मध्य सामाजिक स्थिति के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4.ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण के मध्य बौद्धिक स्थिति के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।

VII कार्यप्रणाली

अध्ययन की विधि सर्वेक्षण विधि होगीI हम सर्वेक्षण ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के **600 B.Ed** प्रशिक्षुओं पर लागू किया जाएगा और सर्वेक्षण द्वारा डाटा प्राप्त किया जाएगा और फिर आगे के परिणामों के लिए निम्न सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया जाएगा -

1 माध्य

2 मानक विचलन

3 सहसंबंध

VII नमूना

इस अध्ययन के लिए नमूना **600 B.Ed** प्रशिक्षुओं का होगा जो कि ग्रामीण और शहरी शैक्षणिक संस्थानों से हैंI

प्रशिक्षणार्थी	क्षेत्र	छात्रों की संख्या
शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय	शहरी	**300**
	ग्रामीण	**300**

IX डेटा संग्रह के उपकरण

इस अध्ययन में डेटा संग्रह के दो प्रकार के उपकरण होंगे-

1.मानकीकृत उपकरण -बुद्धि परीक्षण

इस उपकरण का उपयोग बौद्धिक अवस्था को मापने के लिए किया जाएगाI

2. स्व-निर्मित टूल- प्रश्नावली

इस टूल का उपयोग वित्तीय स्थिति ,पारिवारिक स्थिति, सामाजिक स्थिति मापने के लिए किया जाएगा।

X समस्या की सीमा

1.यह उन बी.एड कॉलेजों तक ही सीमित है, जो राजस्थान विश्वविद्यालय से संबद्ध हैं**।**

2.यह जयपुर शहर तक ही सीमित है**।**

3.यह अध्ययन शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बी एड कॉलेजों तक ही सीमित है।

XI संदर्भ सूची

1. अग्रवाल जे.सी.”शिक्षा का दार्शनिक ,सामाजिक और आर्थिक आधार ”
अग्रवाल प्रकाशन **201314**।

2. मुचेल, मुहेश कुमार “ महिला शिक्षा और सशक्तीकरण” नई दिल्ली **2010**

3. सिंह.सविता ”गांधी और महिला सशक्तिकरण। ”अक्टूबर **2002**

4 देवपुरा प्रतापमल “महिला सशक्तीकरण में शिक्षा का महत्व” ग्रामीण विकास मंत्रालय,
दिल्ली , मार्च **2008**

5. गुप्ता, अजली ”महिलाओं की स्थिति पर वैश्वीकरण का प्रभाव” मार्च **2006** दिल्ली।

6 मल्होत्रा ए ,स्कूलर एसआर ,सी मेजरिंग “ अंतर्राष्ट्रीय विकास में चर के रूप में महिला सशक्तिकरण”वर्ल्ड बैंक जेंडर और डेवलपमेंट ग्रुप बैकग्राउंड पेपर ,वर्ल्ड बैंक, वाशिंगटन डीसी **।**

7. महिला आयोग और विकास “महिला सशक्तीकरण दृष्टिकोण:कार्यप्रणाली गाइड”**।**

8. मेसन के ओ ,स्मिथ एच एल” महिला सशक्तीकरण और सामाजिक संदर्भ पांच महासागर देशों के परिणाम” लिंग और विकास समूह ,वर्ल्ड बैंक ,वाशिंगटन, डीसी **2000** से

9. मॉसडेल एस. “महिला सशक्तीकरण का आकलन एक वैचारिक ढांचे के प्रति “अंतर्राष्ट्रीय विकास **2005;17:243-257**

10.अजीता एसआर, एक मिशन -महिला सशक्तिकरण,
वाराणसी :एस आर ए पब्लिकेशन, **2003**

11 अबुजा ,राम “भारतीय सामाजिक व्यवस्था “जयपुर :रावत प्रकाशन **2004**

12 एम्ब्रोस युवान, गरीबों का सशक्तीकरण -सामाजिक बदलाव के लिए एनीमेशन, नई दिल्ली ,भारत, **1992**

13.डेविड जेम्स और जोन्स , वैश्वीकरण के आयामों, बैंगलोर सामाजिक क्रिया का केंद्र **1998**

14. ऑगस्टीन डी, महिला सशक्तिकरण एसएचजी दृष्टिकोण के माध्यम से, 2010) की भारत पत्रिका सामाजिक कार्य द्वारा
15. विश्व बैंक (2002), मल्होत्रा एट अल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय विकास में एक महिला के रूप में सशक्तीकरण को मापना।
16. मोगलेन, एच "पावर एंड एम्पावरमेंट"। वुमेन्स स्टडीज़ इंटरनेशनल फोरम 6: 2 (1983)
17. देसाई, ए.आर., ग्रामीण समाजशास्त्र। बॉम्बे: लोकप्रिय प्रकाशन, 1992।
18. दुर्खीम, एमिल, समाजशास्त्रीय विधि के नियम। न्यूयॉर्क: द फ्री प्रेस, 1966
19. फ्राइडमैन, जॉन, सशक्तिकरण: वैकल्पिक राजनीति की राजनीति। कैम्ब्रिज: ब्लैकवेल,